CASE STUDY

अपना स्वास्थ्य, अपनी पहल

झुपेल पंचायत
बांसवाडा ब्लॉक
बांसवाडा जिला

2017/No. 01

स्वयंसेवक ने संभाला सामुदायिक नेतृत्त्व

Knowledge. Voice. Democracy.
PRIA

महिला बैढक में हिस्सा लेते कचरू लाल

Azim Premji Philanthropic Initiatives

dasra

बांसवाडा राजस्थान का एक पिछड़ा जिला है। यहाँ के लोगो की आजीविका का साधन कृषि है, इस जिले में औद्योगिक इकाइयाँ बहुत ही कम है। कुछ प्रमुख कारखानों में मयूर सूटिंग, संटेक्स वाटर टैंक और कोरोमंडल फेर्लिलिर्ज्स प्रमुख है। इन मीलों में कुछ स्थानीय लोग मजदूरी करके भी अपनी आजीविका कमाते है। बांसवाडा के लोगों का प्रमुख व्यवसाय कृषि ही है। यहाँ की प्रमुख फसले कपास,गेंहू,मक्का,सब्जिया, सोयाबीन है बांसवाडा का अधिकांश क्षेत्र माही नदी के पानी से सिंचित होता है।

बांसवाडा जिले के बांसवाडा ब्लॉक की ग्राम पंचायत झुपेल मुख्य बांसवाडा से लगभग 12 किलो मीटर की दुरी पर है ,यह पंचायत प्रसिद्ध माही बांध से लगभग 35 किलोमीटर दूर है। यहाँ की आबादी 5000 के लगभग है व इस 5000 की आबादी में महिला बैढक में हिस्सा लेते कचरू लाल दो राजस्व गाँव और 7 वार्ड है । यहाँ अनुसूचीत जनजाति के लोगो की संख्या अधिक है । यह पंचायत वागड़ क्षेत्र के अंतर्गत आती है इसलिए यहाँ के लोग हिंदी भाषा के आलावा वागडी भी बोलते है। यहाँ के नवयुवक (बालक व बालिकाए) किशोरावस्था में विद्यालय की शिक्षा पूर्ण करने के पष्चात स्नातक की पढाई के लिए बांसवाडा शहर में जाते है।

प्रिया की तरफ से बांसवाडा ब्लॉक में मातृ–शिशु स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए एक कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम को विस्तृत और सफल बनाकर मातृ–शिशु स्वास्थ्य के सूचकांकों को सुधारने हेतु ,प्रिया ने स्थानीय युवको कि सहायता लेनी चाही। इसका उद्देश्य था की अधिक से अधिक स्थानीय युवक इस कार्यक्रम के संदेशो को अपने समुदाय तक पहुंचाएं और यथासंभव लोगों की सहायता करें। इसलिए यहाँ के स्थानीय लोगो को स्वयंसेवक बनाने का प्रयास किया गया। स्थानीय स्वयं सेवक अगर मातृ शिशु–स्वास्थ्य या किसी भी विकास प्रक्रिया में सुधार लेने की कोशिश करें तो कार्यक्रम का प्रभाव स्थायी और प्रभावी भी होगा । इसी रणनीति के अनुसार प्रिया ने स्थानीय युवको को स्वयंसेवक बनाने के लिए आमंत्रित किया और उनकी क्षमता वर्धन कार्यक्रम चलाया। चूँकि प्रिया के फील्ड एनिमेटर भी स्थानीय हैं ,स्वयंसेवकों के चुनाव में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण थी व बांसवाडा ब्लॉक में अब तक प्रिया ने 62 स्वयंसेवक बनाए है। इनमे पुरुष स्वयंसेवक 20 है ,और महिला स्वयंसेवक 42 है। इन सभी स्वंय सेवको को प्रिया की तरफ से 2 बार सघन प्रशिक्षण भी दिया गया है। ट्रेनिंग के दौरान इनको बताया गया की स्वयंसेवक के क्या काम है ? और किस तरह वे अपने गाँव के स्वास्थ्य संबधी मुद्दों को या समस्याओ को हल करवा सकते है स्वयंसेवक बिना किसी लाभ की इच्छा के दुसरो की मदद करता है। गाँव की सामूहिक समस्या को किस प्रकार लोगो की मदद से हल कर सकता है। इन सभी बातो को शामिल करते हुए इनकों ट्रेनिंग दी गई थी। इसके अलावा इन स्वयंसेवकों को प्रिया के एनिमेटर्स और कार्यक्रम अधिकारियो का लगातार मार्गदर्षन मिलता रहता है। इन्ही 62 स्वयंसेवको में से एक लोधा ग्राम पंचायत के कचरू लाल डोडियार है। कचरू लाल डोडियार की उम्र 48 वर्श है तथा उनकी शिक्षा 8वी तक है।

कचरू लाल का व्यवसाय मजदूरी व कृषि है व प्रिया से ट्रेनिंग के बाद और प्रिया के साथियों से चर्चा करने के बाद ,कचरू लाल ने अपनी पंचायत की समस्याओं को चिन्हित किया। उन्हें जानकारी मिली की उनके गाँव में पहले कभी महिलाओ कि कोई मीटिंग नही होती थी और न ही टीकाकरण में लोगो की रूचि थी। इस गाँव में बाल विवाह भी होते थे। सामाजिक कुरीतियों के चलते लोग अपने बच्चो की शादी कम उम्र में ही कर देते.थे। लोगो को सरकारी योजनों के बारे में भी जानकारी नही थी। गाँव में इक्के–दुके लोगों को ही पता था की किस प्रकार सरकरी योजनाओ का लाभ लेना है कई गर्भवती व धात्री महिलाओं एवं ग्रामीण लोगो को कागजों की आपूर्ति के अभाव में जननी सुरक्षा योजना, भामाशाह स्वास्थ्य योजना एवं खाध्य सुरक्षा योजना का लाभ भी नही मिल रहा था।

कचरू लाल डाडोरिया को लगा कि अगर उपयुक्त सूचनाएं लोगों तक पहुँचा दी जाएँ तो कई समस्याओं का हल तुरंत आ जायेगा। उन्होंने इस दिषा में काम करने का इरादा बना व उन्हें लग रहा था की उनके प्रयास से उनके ग्राम पंचायत के लोगों की विभिन्न समस्याओ का समाधान हो सकता है । लेकिन उनके सामने प्रष्न था की वो ये सूचनाएं कहाँ से लायें ? क्या करें की गाँव में लोग खुषहाल हो जाएँ ?

प्रिया के साथ काम करके अपने अनुभवों को साझा करते कचरू लाल

कचरू लाल को प्रिया से सम्बन्ध और ट्रेनिंग का लाभ मिला । उन्होंने सभी प्रकार की योजनाओं कि सुचना का सरल जानकारी प्रिया से प्राप्त किया फिर उन्होंने अपने गाँव में प्रिया की मदद से महिला बैठकों का आयोजन किया । इसी तरह की कई बैठकों में महिला समूह के गठन हुए व महिला समूहों को समझाया गया । चर्चा के माध्यम से बताया की उन्हें अपने गाँव में पूर्ण टीकाकरण करवाना है। कचरू लाल ने महिलाओं से कहा की उन्हें सभी को पंचायत की बैठकों व ग्राम सभा में हिस्सा लेना चाहिए और पंचायत के सामने अपनी समस्याओ को रखना चाहिए । गाँव में बाल विवाह को रोकने का प्रयास भी करना चाहिए। पंचायत की बैठकों में जाकर पंचायत और सरपंच को गाँव की स्वास्थ्य से जुडी समस्याओ से अवगत भी कराया । कचरू लाल को प्रिया से सम्बन्ध और ट्रेनिंग का लाभ मिला । उन्होंने सभी प्रकार की योजनाओं कि सुचना का सरल जानकारी प्रिया से .प्राप्त किया.फिर उन्होंने अपने गाँव में प्रिया की मदद से महिला बैठकों का आयोजन किया । इसी तरह की कई बैठकों में महिला समूह के गठन हुए व प्रिया के साथ काम करके अपने अनुभवों को साझा करते कचरू लाल महिला समूहों को समझाया गया । चर्चा के माध्यम से बताया की उन्हें अपने गाँव में पूर्ण टीकाकरण करवाना है। कचरू लाल ने महिलाओं से कहा की उन्हें सभी को पंचायत की बैठकों व ग्राम सभा में हिस्सा लेना चाहिए और पंचायत के सामने अपनी समस्याओ को रखना चाहिए। गाँव में बाल विवाह को रोकने का प्रयास भी करना चाहिए । पंचायत की बैठकों में जाकर पंचायत और सरपंच प्रिया के साथ काम करके अपने अनुभवों को साझा करते कचरू लाल को गाँव की स्वास्थ्य से जुडी समस्याओं से अवगत भी कराया।

पहले तो कचरू लाल की बातों का कोई खास असर लोगों पर नजर नही आया । लेकिन प्रिया के साथियों के लगातार उत्साहवर्धक से कचरू लाल ने हिम्मत नही हारी । वो प्रिया कार्यालय और सरकारी कार्यालय से सरकारी योजनाओ के बारे में जानकारी लेते थे । उन्हें खुद समझते थे और फिर लोगों को समझाते थे । लोगों को भी लगा की कचरू लाल द्वारा दी गई सूचनाएं उनके लिए लाभप्रद है । शुरू में तो इक्के– दुक्के लोगों ने योजनाओ का लाभ लेने में सक्रियता दिखाए । लेकिन जब इन लोगों को योजनाओ का लाभ हुआ तो फिर क्या ? कचरू लाल से लोग खुद जानकारिया मांगने लगे । कचरू लाल को भी अपनी महत्ता बढती देख कर खुशी बढ़ने लगी व गाँव के लोग भी खुश।

सफलताओ का सिलसिला जब चला , तो चलता ही गया व कचरू लाल के प्रयास से महिला समूह बने , महिलाओ ने अपने समूह में अपनी बचत जमा करना षुरू किया बचत समूह की सभी महिलाए कचरू लाल के माध्यम से प्रिया से भी संपर्क में रहने लगी । बचत समूह एक शक्तिशाली महिला समूह बन गया । जिन महिलाओ की अपनी कोई व्यक्तिगत राय नही होती थी , वही महिलाए समूह की सदस्य के रूप में पंचायतो और सरकारी कर्मचारियों से बातें करने लगी व उसी गाँव का होने के कारण कचरू लाल को गाँव के अन्य लोगो का भी सहयोग मिलने लगा। प्रिया के लगातार मार्गदर्शन के सहारे ,कचरू लाल ने अपनी बढ़ी लोकप्रियता का प्रयोग गाँव की बुराईयों को कम करने के लिए सोचा।

गाँव के बड़े बुजुर्गों और युवकों के सहयोग से उन्होंने गाँव में होने वाले कई बाल विवाह को समझा भुझाकर रोका। गर्भवती महिलाओ के ससुर और पति को प्रोत्साहित किया की वो अपनी गर्भवती बहु या पत्नी का नियमित ANC कराएँ तथा बच्चों का टीकाकरण कराएँ। कचरू लाल ने गाँव के पंचायत सदस्यों को भी अपने प्रयत्नों का हिस्सा बनाया।

कचरू लाल ने सूचना के अधिकार (RTI) का प्रयोग करके कई ऐस सूचनाओ को भी प्राप्त किया, जिससे ग्रामीणों को लाभ मिला। उन्होंने लोगों के आधार कार्ड,एवं अन्य दस्तावेजो के बनाने में मदद किया। आज स्थिति यह है की कचरू लाल ने गाँव का सामाजिक नेतृत्व ले लिया है। यह एक ऐसा परिवर्तन है जिससे कचरू लाल भी खुश और गाँव भी खुश। प्रिया के साथियों को भी एक प्रभावी स्थानीय फैसिलिटेटर मिल गया। प्रिया की भूमिका समय समय पर कचरू लाल की क्षमता वृद्धि और मार्गदर्षन है। कचरू लाल उसी मार्गदर्शन के आधार पर गाँव में सामजिक और आर्थिक प्रक्रियाओं को सहयोग देते है। स्थानीय गाँव का होने के कारण, कचरू लाल की बातों का प्रभाव भी अच्छा है । आज कल कचरू लाल के गाँव में टीकाकरण ,ANC ,महिलाओ के प्रति व्यवहार में बदलाव की बात सभी करते है। उन्होंने एक प्रकार से अपने गाँव के विकास में जनसहभागिता भी बढ़ाई है । महिला ग्राम सभाओं में भीड़ होती है। ग्राम सभा में महिला और युवकों की सहभागिता बढ़ी है। पंचायत भी बहुत सक्रीय नजर आती है। कचरू लाल के लगातार प्रयास से उनके गाँव में सब कुछ बेहतर हो गया ।उम्मीद है ये परिवर्तन जारी रहेंगा क्यूंकि कचरू लाल तो हमेशा अपने गाँव में रहेंगे। इतना ही नही , कचरू लाल का एक अनुसरण करते हुए गाँव के कई युवक भी स्थानीय विकास के प्रक्रमो में स्वयं पहल करने लगे है।

जब कचरू लाल से पूछा की आगे क्या होगा? तो उनकी सहज जवाब था " अगले कुछ समय में प्रिया से सीख कर मै अपने गाँव में और भी बड़े काम करने की कोशिश अपनी पंचायत के सहयोग से करूँगा"। जब ये पूछा गया की अगर ये काम भविष्य में छोड़ दिया तो ? उन्होंने सहजता से मुस्कराते हुए कहा " क्यूँ छोड़ूंगा जी ? इसी काम ने तो हमे नाम और इज्जत दी है । जब तक ये काम है , मेरा नाम है और मेरी इज्जत है। फिर भला मेरा प्रयास क्यूँ रुकेगा ? " स्थानीय स्वयंसेवकों के चुनाव और उनके प्रशिक्षण के साथ लगातार मार्गदर्शन करने की प्रिया की रणनीति कचरू लाल के केस में काफी सफल लगाती है। ऐसी पूर्ण सम्भावनाएं है की भविष्य में भी कचरू लाल परिवर्तन की इस प्रक्रिया को लगातार आगे बढ़ाते जायेंगे।

This case study was written by Seema Sharma, Assistant Program Officer for PRIA's "Reforming Local Governance For Responsive And Effective Service Deliveries In Selected Blocks Of Rajasthan" Project, in Partnership with Azim Premji Philanthropic Initiatives (APPI) and Dasra.